بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد

Office of The sadar Majlis Ansarullah Bharat

دفتر صدر مجلس انصار اللہ بھارت

Ph. +91-01872-220186, Fax, +91-01872-224186, Mob, +91-9815494687, E-Mail: ansarullahbharat@gmail.com

सारांश खुत्बः जुम्अः सैय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफ़तुल मसीहिल अलख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ दिनांक **24.03.2017** मस्जिद बैतुल फ़तूह लंदन।

हम अहमदियों का काम है कि इस्लाम की सुन्दरता को दुनया के सामने पेश करें

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को अल्लाह तआला ने इस लिए भेजा है कि आपको सफल बनाना है तथा इस्लाम अब आपके द्वारा ही फैलना है

तशह्हुद तअव्वुज़ तथा सूरः फ़ातिहः की तिलावत के पश्चात हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया-

कल 23 मार्च थी और 23 मार्च अहमदिया जमाअत के इतिहास में बड़ा महत्त्व पूर्ण दिन है क्यूँकि इस दिन हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी अलैहिस्सलाम ने अहमदिया जमाअत की बैअत के द्वारा यथावत आधार शिला रखी। आपने फ़रमाया कि आने वाला मसीह मौऊद और महदी मअहूद जिसके आने की आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सूचना दी थी, वह मैं हूँ। आपने फ़रमाया कि मैं इस लिए भेजा गया हूँ ताकि तौहीद की स्थापना करके अल्लाह का प्रेम दिलों में पैदा करूँ। आपने फ़रमाया कि ख़ुदा तआला चाहता है कि उन समस्त आत्माओं को जो धरती के विभिन्न क्षेत्रों के निवासी हैं, क्या युरुप और क्या एश्या, उन सबको जो नेक प्रकृति रखते हैं तौहीद की ओर खींचे और अपने बन्दों को केवल एक दीन पर एकत्र करे, यही ख़ुदा तआला का लक्ष्य है जिसके लिए मैं दुनया में भेजा गया हूँ। अतः तुम इस लक्ष्य का अनुसरण करो परन्तु विनम्रता तथा शिष्टाचार एवं दुआओं पर ज़ोर देने के द्वारा।

फिर आपने फ़रमाया कि यह स्थान तथा स्तर मुझे आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अनुसरण तथा आपसे सच्चे इश्क़ के कारण मिला है इस लिए पूरे विश्व के लिए यह सन्देश है कि इस रसूल से प्रेम करो तथा इसका आज्ञा पालान करो। इसके द्वारा ख़ुदा तआला से भी सम्बंध स्थापित होगा तथा वास्तविक मोमिन भी बन सकोगे। आप फ़रमाते हैं कि आदम की समस्त संतान के लिए अब कोई रसूल और सिफ़ारिश करने वाला नहीं मगर मुहम्मद मुस्तुफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम। अतः प्रयत्न करो कि सच्चा प्रेम उस महामान्य के साथ रखो तथा उसके अतिरिक्त को, उस पर किसी प्रकार की बड़ाई मत दो, ता आसमान पर तुम मोक्ष प्राप्त लिखे जाओ और याद रखो मोक्ष वह चीज़ नहीं है जो मरने के बाद प्रकट होगा अपितु वास्तविक मोक्ष वह है कि इस संसार में अपना प्रकाश दिखलाता है। मुक्ति प्राप्त कौन है? वह जो विश्वास रखता है कि ख़ुदा ही सत्य है और मुहम्मद मुस्तुफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उसके तथा समस्त मानव जाति के बीच एक मात्र सिफ़ारिश करने वाले हैं तथा आसमान के नीचे, न उसके स्तर का कोई अन्य रसूल है और न क़ुर्आन के स्तर की और कोई किताब है तथा किसी के लिए ख़ुदा ने न चाहा कि वह सदैव जीवित रहे मगर यह महामान्य नबी सदैव के लिए जीवित है।

यह है वह स्तर एवं प्रेम आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से, जिसको आपने सदैव अभिव्यक्त किया तथा अपने मानने वालों को भी इस बात की प्रेरणा दी कि वे उस प्रेम एवं स्तर को अपने सामने रखें। निर्दयी हैं वे लोग जो कहते हैं कि अहमदी, नऊज़ु बिल्लाह, हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के स्तर से आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के स्तर को कम करते हैं तथा आजकल अलजीरियः में भी अहमदियों पर यह आरोप लगाया जा रहा है तथा आरोप लगाकर उन्हें जेलों में डाला जा रहा है। यहाँ तक कि अब महिलाओं पर भी उन्होंने हाथ डालने शुरु कर दिए हैं,

उनपर मुक़दमें क़ायम करने शुरु कर दिए हैं। परन्तु महिलाएँ भी यही पैग़ाम भिजवा रही हैं मुझे, कि मसीह मौऊद को माना है हमने तथा इस मानने के बाद ही हमें वास्तविक तौहीद और आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की प्रतिष्ठा तथा आपसे सच्ची मुहब्बत के यथार्थ का पता चला है। हम कैसे अपने ईमान से पीछे हठ सकती हैं। जहाँ हम यह दुआ करते हैं कि अल्लाह तआला उन अहमदियों के लिए आसानियाँ पैदा फ़रमाए वहाँ हमारी यह दुआ भी है कि अल्लाह तआला मुसलमानों को आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सच्चे आशिक़ को मानने का सामर्थ्य प्रदान करे। वह जो अल्लाह तआला के वादे के अनुसार तौहीद के क़यााम तथा इस्लाम के पुर्नोद्धार के लिए आया था। अल्लाह तआला से प्रेम तथा तौहीद की स्थापना के लिए आपकी तड़प की एक झलक आपके इन शब्दों से मिलती है। आप अल्लाह तआला को सम्बोधित करके फ़रमाते हैं- देख मेरी आत्मा अत्यंत भरोसे के साथ तेरी ओर ऐसी उड़ान भर रही है जैसे कि पक्षी अपने घोंसले की ओर आता है तो मैं तेरी शक्ति के निशान का अभिलाषी हूँ परन्तु न अपने लिए तथा न ही अपने सम्मान के लिए बल्कि इस लिए कि लोग तुझे पहचानें तथा तेरे पवित्र मार्ग को धारण करें और जिसको तू ने भेजा है उसको झुठलाकर हिदायत से दूर न जा पड़ें। मैं गवाही देता हूँ कि तू ने मुझे भेजा है तथा मेरे समर्थन में बड़े बड़े निशान प्रकट किए हैं यहाँ तक कि सूर्य और चन्द्रमा को आदेश दिया कि वे रमज़ान के महीने में भविष्य वाणी की तिथियों के अनुसार ग्रहण में आवें। मैं तुझे पहचानता हूँ कि तू ही मेरा ख़ुदा है और इस लिए मेरी आत्मा तेरे नाम से ऐसी उछलती है जैसे कि दूध पीने वाला शिशु माँ को देखने से, परन्तु अधिकांश लोगों ने मुझे नहीं पहचाना तथा स्वीकार नहीं किया। इस बात से जहाँ आप अलैहिस्सलाम की अल्लाह तआला से मुहब्बत तथा उसकी महानता की स्थापना के लिए तड़प नज़र आती है वहाँ मानवता को बचाने के लिए व्याकुलता की भी भारी अभिव्यक्ति नज़र आती है। आपको कितनी तड़प थी कि यह अल्लाह तआला से इश्क़ व मुहब्बत की चिंगारी दूसरों के दिलों में भी पैदा हो जाए। इस विषय में आप फ़रमाते हैं-

कैसा भाग्यहीन है वह मनुष्य जिसको अब तक यह नहीं पता कि उसका एक ख़ुदा है जो प्रत्येक वस्तु पर नियन्त्रण रखता है। हमारी जन्नत हमारा ख़ुदा है, हमारे उच्च स्तरीय आनन्द हमारे ख़ुदा में हैं क्यूँकि हमने उसको देखा तथा प्रत्येक सुन्दरता उसमें पाई। यह सम्पत्ति लेने के योग्य है यद्यपि जान देने से मिले तथा यह हीरा ख़रीदने के योग्य है यद्यपि पूरा अस्तित्व खो देने से प्राप्त हो। ऐ भाग्यहीनो! इस स्रोत की ओर दौड़ो कि वह तुम्हें सींचेगा। यह जीवन का स्रोत है जो तुम्हें बचाएगा। मैं क्या करूँ तथा किस प्रकार इस शुभ सूचना को दिलों में बिठा दूँ। किस डफ़ली से मैं बाज़ार में मनादी करूँ कि तुम्हारा यह ख़ुदा है ताकि लोग सुन लें और किस दवा से मैं इलाज करूँ ताकि सुनने के लिए लोगों के कान खुलें।

अतः कितना दर्द है इन शब्दों की तह में, बल्कि कहना चाहिए कि प्रत्येक शब्द में दर्द के कई पहलू छिपे हुए हैं। प्रत्येक शब्द की कई परतें हैं तथा प्रत्येक परत में दर्द है तथा इनकी गहराई में प्रत्येक अपनी समझ एवं विवेक के अनुसार जा सकता है।

आप फ़रमाते हैं कि यदि ख़ुदा के हो जाओगे तो निःसन्देह समझो कि ख़ुदा तुम्हारा ही है। तुम सोए हुए होगे और ख़ुदा तआला तुम्हारे लिए जागेगा, तुम दुश्मन से अपरिचित होगे और ख़ुदा उसे देखेगा तथा उसके षड्यन्त्र को तोड़ेगा। तुम अभी तक नहीं जानते कि तुम्हारे ख़ुदा में क्या क्या शक्तियाँ हैं और यदि तुम जानते तो तुम पर कोई ऐसा दिन न आता कि तुम दुनया के लिए बड़े दुःखी हो जाते। अतः यह सम्बंध है ख़ुदा तआला से जिसको हमने प्राप्त करना तथा स्थापित करना है जो आप अपने मानने वालों से चाहते हैं कि ये स्तर प्राप्त हों। फ़रमाया कि यदि तुम्हारी आँखें हों तो तुम्हें नज़र आ जाए कि ख़ुदा ही ख़ुदा है और सब कुछ तुच्छ है।

तौहीद के क़याम और इस्लाम के पुनर्जागरण का काम आप अलैहिस्सलाम को आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अनुसरण तथा आपसे इश्क़ व मुहब्बत के कारण मिला। इस इश्क़ व मुहब्बत के दृश्य हमें आपके अस्तित्व में किस प्रकार दिखाई देते हैं इसकी असंख्य घटनाएँ हैं।

एक स्थान पर आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़ात पर विरोधियों की हंसी ठट्टा करने की बातें सुनकर अपने मन की स्थिति को अभिव्यक्त करते हुए आपने फ़रमाया कि मेरे दिल को किसी चीज़ ने भी इतना दुःख नहीं पहुंचाया

जितना कि इन लोगों के हास परिहास ने पहुंचाया है जो वे हमारे रसूल-ए-पाक सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की शान में करते रहते हैं। उनके मन को ठेस पहुंचाने वाले आरोपों ने जो वे ख़ैरुलबशर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सुन्दर अस्तित्व के विरुद्ध करते हैं, मेरे दिल को बड़ा दुःखी कर रखा है। ख़ुदा की क़सम यदि मेरी सारी संतान तथा संतान की संतान और मेरे सारे दोस्त तथा मेरे समस्त सहयोगी एवं सहायक मेरी आँखों के सामने मार दिए जाएँ और मेरे अपने हाथ एवं पाँव भी काट दिए जाएँ तथा मेरी आँख की पुतली निकाल फेंकी जाए और मैं अपनी समस्त अभिलाषाओं से वंचित कर दिया जाऊँ तथा अपनी समस्त ख़ुशियों और समस्त समृद्धियों को खो बैठूँ तो इन सारी बातों की तुलना में मेरे पर यह कष्ट अधिक भारी है कि रसूल-ए-अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर इस प्रकार के अपवित्र हमले किए जाएँ।

क्या कोई है जो इस प्रकार की भावनाओं को प्रकट कर सके। इश्क़ व मुहब्बत का दावा करने वाले तो अनेक हैं। रिसालत की मर्यादा तथा ख़त्म-ए-नबुव्वत के नाम पर फ़ितना और फ़साद करने वाले तो बहुत लोग हैं परन्तु क्या प्रयास किए हैं उन्होंने आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के स्तर को दुनया से मनवाने के लिए और इस्लाम तथा क़ुर्आन को दुनया में फैलाने के लिए। आपके शब्द केवल मुंह का दावा नहीं हैं बल्कि आपके साथ सम्बंध रखने वाले भी तथा अन्य लोग भी इस बात के साक्षी हैं कि आपकी आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से इश्क़ व मुहब्बत की अभिव्यक्ति, आपके दिल की आवाज़, आपकी प्रत्येक क्रिया से प्रकट होती है।

अतः यह सब कुछ जो आपने किया तो इस्लाम को अल्लाह तआला का अन्तिम दीन तथा सम्पूर्ण धर्म प्रमाणित करने के लिए किया और आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ इश्क़ के कारण तथा आपके स्तर का लोहा मनवाने के कारण किया। विश्व को बताने के लिए किया कि वास्तविक स्तर आपका ही है। समस्त विश्व को तथा विश्व के धर्मों पर यह स्पष्ट किया कि दीन-ए-मुहम्मद के जैसा कोई दीन नहीं है। आपत्तियाँ करने वाले आपके आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से इश्क़ व मुहब्बत की अभिव्यक्ति को तो पढ़ें, तथा इस पर विचार करें अन्यथा आरोप लगाने के लिए आपत्ति करना तो केवल मूर्खता की निशानी है। आप एक आज्ञाकारी शिष्य तथा एक आभारी सेवक की भांति सदैव फ़रमाते थे कि यह सब कुछ मुझे मेरे आक़ा हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के कारण तथा आपके अनुसरण से ही मिला है। अतः इसको अभिव्यक्त करते हुए आप एक स्थान पर फ़रमाते हैं कि यदि मैं आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की उम्मत न होता और आपका अनुसरण न करता तथा दुनया के समस्त पर्वतों के बराबर मेरे कर्म होते तो फिर भी मैं कभी यह अल्लाह तआला से बात करने तथा सम्बोधित होने का वरदान न पाता।

ये बातें सुनकर, जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम पर आपत्ति करता है वह ज़ालिम और मूर्ख तथा उपद्रवी है इसके अतिरिक्त कुछ नहीं कहा जा सकता। उनका मामला अब ख़ुदा तआला पर है ये जो बड़े बड़े आलिम बने फिरते हैं। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की नियुक्ति का उद्देश्य जहाँ तौहीद की स्थापना तथा आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के स्तर एवं प्रतिष्ठा को स्पष्ट करके दुनया को आपके झण्डे तले लाना था। वहाँ बन्दों के अधिकारों को पूरा करना तथा अल्लाह तआला के बन्दों पर स्नेह का आभास दिलवाना तथा उसके अनुसार कर्म कराना भी था। अतः आपने बैअत की शर्तों में भी यह शर्त रखी। शर्त न.-4 में है कि मानव जाति को सामान्य रूप से तथा मुसलमानों को विशेष रूप से अपनी मानसिक वृत्ति के जोश के कारण किसी प्रकार की अनुचित कठिनाई नहीं देगा। फिर नवीं शर्त है कि सामान्यतः अल्लाह के बन्दों से सहानुभूति में केवल अल्लाह के लिए व्यस्त रहेगा और जहाँ तक बस चल सकता है ख़ुदा के द्वारा दी हुई अपनी शक्तियों एवं समार्थ्यों से मानव जाति को लाभान्वित करेगा। अतः इसके अनुसार इस्लाम की शिक्षा का वर्णन करते हुए आप फ़रमाते हैं कि दीन के दो ही भाग हैं, एक ख़ुदा तआला से प्रेम करना तथा एक मानव जाति से इतना प्रेम करना कि उनकी कठिनाई को अपनी कठिनाई समझ लेना और उनके लिए दुआ करना।

एक स्थान पर आप फ़रमाते हैं- मैं समस्त मुसलमानों और ईसाइयों और हिन्दुओं और आर्यों पर यह बात स्पष्ट करता हूँ कि दुनया में कोई मेरा शत्रु नहीं है। मैं मानव समाज से ऐसा प्रेम करता हूँ कि जैसी दयालु माँ अपने बच्चे से अपितु इससे बढ़कर। फ़रमाया कि मैं केवल उन झूठी आस्थाओं का दुश्मन हूँ जिनके द्वारा सत्य की हत्या होती है। इंसान से

सहानुभूति मेरा कर्त्तव्य है और झूठ और शिर्क और अत्याचार और प्रत्येक कुकर्म और अन्याय और अशिष्टता से विमुखता मेरा नियम है।

ये बातें आपने केवल लिखने के लिए नहीं लिख दीं अथवा केवल दावा ही नहीं किया कि आपको मानव जाति से प्रेम है। इसके अनुसार कर्म भी आपके जीवन में हमें दिखाई देते हैं। आप अल्लाह की सृष्टि के लिए ताऊन के प्रकोप से मुक्ति के लिए दुआ करते थे कि इलाही, यदि ये लोग ताऊन के प्रकोप से नष्ट हो जाएँगे तो फिर तेरी आराधना कौन करेगा। जबकि ताऊन आपके सत्यापन का प्रमाण था। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की आवाज़ में इतनी करुणा और दर्द था कि सुनने वालों को आश्चर्य होता था।

अतः विचार करें कि एक भविष्य वाणी के अनुसार विरोधियों पर यह प्रकोप आ रहा है परन्तु आप उसके दूर होने की दुआ मांग रहे हैं। मौलवी मुहम्मद हुसैन बटालवी साहब, जिन्होंने विरोध में अति करते हुए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम पर काफ़िर होने का फ़त्वा लगाया तथा दज्जाल और पथभ्रष्ट घोषित किया, नऊज़ु बिल्लाह। पूरे देश में आपके विरुद्ध घृणा और दुश्मनी की आग भड़काई परन्तु एक मुक़दमे में जब आपके वकील ने मौलवी मुहम्मद हुसैन के परिवार के बारे में कुछ आपत्ति जनक प्रश्न करने चाहे तो आप अलैहिस्सलाम ने सख़्ती से रोक दिया। वकील मौलवी फ़ज़्ले दीन साहब ग़ैरअहमदी थे, वे कहा करते थे कि मिर्ज़ा साहब अनोखे प्राणी हैं, अद्भुत शिष्टाचार के स्वामी हैं कि एक व्यक्ति उनकी प्रतिष्ठा बल्कि जान पर आक्रमण करता है और उसके उत्तर में जब उसके साक्ष्य को दुर्बल करने के लिए कुछ प्रश्न किए जाते हैं तो आप तुरन्त रोक देते हैं कि मैं इस प्रकार के प्रश्नों की अनुमति नहीं देता।

इस प्रकार यह तो एक उदाहरण है कि आपके मिशन को नष्ट करने के लिए असंख्य आलिमों ने प्रयास किए, असंख्य तथाकथित आलिमों ने आपका विरोध किया, आप पर कुफ्र के फ़त्वे लगाए और अब तक लगाते चले आ रहे हैं। इसी का परिणाम है कि दुनया के विभिन्न मुस्लिम देशों में हमारा विरोध होता है। यह हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की शिक्षा का हम पर प्रभाव है कि आज भी हम उन विरोधियों के जवाब में उनके विरुद्ध शिष्टाचार के स्तर को नहीं छोड़ते तथा क़ानून को भी अपने हाथ में नहीं लेते। काश उन लोगों को समझ आ जाए कि इस युग के हकम और अदल और मसीह और महदी हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी अलैहिस्सलाम ही हैं और इस्लाम के प्रसार और तौहीद का क़याम और आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की वास्तविक हकूमत जो दिलों पर स्थापित होनी है, धरती पर नहीं दिलों पर क़ायम होनी है वह मसीह मौऊद के द्वारा ही स्थापित होनी है तथा आपकी जमाअत के द्वारा ही क़ायम होनी है, न कि किसी तलवार अथवा बन्दूक़ की शक्ति से अथवा आतंक फैलाने से और इस्लाम के नाम पर निर्दोषों की हत्या करने से।

अतः ऐसे में हम अहमदियों का काम है, जैसा कि मैं पहले भी कहता रहा हूँ कि इस्लाम की सुन्दरता को दुनया के सामने पेश करें। जहाँ तक अहमदियत के विरोध का विषय है, ये अहमदियत का कुछ नहीं बिगाड़ सकते । हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को अल्लाह तआला ने भेजा है, इस लिए ही भेजा है कि आपको सफल बनाना है और इस्लाम अब आपके द्वारा ही फैलना है।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं- मैं तो एक बीजारोपण करने आया हूँ तो मेरे हाथ से वह बीज बोया गया और अब वह बढ़ेगा और फूलेगा और कोई नहीं जो उसको रोक सके। अल्लाह तआला के मसीह का लगाया हुआ यह बीज अल्लाह तआला की कृपा से फल फूल और बढ़ रहा है। हमने यदि इसकी हरी भरी डालियाँ बनना है तो हमारा काम है कि हम अल्लाह तआला से मुहब्बत, आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से इश्क़ और अपने कर्म और मानव जाति से सहानुभूति तथा प्रेम को इस प्रकार बनाएँ कि हमारे प्रत्येक काम से यह प्रकट हो। अल्लाह तआला हमें इसकी तौफ़ीक़ अता फ़रमाए।